

डॉ. पदमा पाटील

एम. ए., एम. फिल., पीएच. डी.

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

संस्तुति पत्र

मैं संस्तुति करती हूँ कि श्री. श्रावण आबा कांबळे का एम्. फिल
(हिंदी) उपाधि हेतु प्रस्तुत “शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी” (‘कर्मनाशा की हार’
और ‘इन्हें भी इंतजार है’ के परिप्रेक्ष्य में) लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 2/05/2009



(डॉ. पदमा पाटील)

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. आशा स्नेहलकुमार मणियार

एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.

प्रपाठक, हिंदी विभाग,

देवचंद महाविद्यालय, अर्जुननगर

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री.श्रावण आबा कांबळे ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए “शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी” (‘कर्मनाशा की हार’ और ‘इन्हें भी इंतजार है’ के परिप्रेक्ष्य में) इश्वरिषक से लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्व योजना के अनुसार संपन्न इस शोध कार्य में शोध-छात्र ने मेरे सुझावों का पूर्णतः पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करती हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 02/05/2009

शोध-निर्देशिका

(डॉ. आशा स्नेहलकुमार मणियार)

डॉ. आशा एस्. मणियार

हिंदी पंडित, एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी.

प्रपाठक, स्नातक तथा स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,

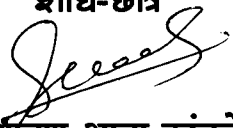
देवचंद कॉलेज, अर्जुननगर

प्रख्यापन

मैं प्रख्यापित करता हूँ कि “शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित नारी ”
(‘कर्मनाशा की हार’ और ‘इन्हें भी इंतजार है’ के परिप्रेक्ष्य में) यह ^{लघुशोध प्रबंध} लेखन कार्य मेरा
अपना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत
की जा रही है। यह शोध कार्य इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी
विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 02/05/2009

शोध-छात्र

(श्री. श्रीवण आबा कांबळे)